Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 07, July - 2024

DOIs:10.2018/SS/202407006 --:-- Research Paper / Article / Review

भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1] सागर सिंह सिरोला, [2] प्रो. एल. एम. पाण्डेय

[1] शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, शिक्षक शिक्षा विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (263001) उत्तराखण्ड।

[2] आचार्य एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, शिक्षक शिक्षा विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (263001) उत्तराखण्ड।

[1]अणु-विपत्र सूत्र : sagarsinghsirola@gmail.com [2]अणु-विपत्र सूत्र : lmpandey.29@gmail.com

सारांशिका : प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में शिक्षा को मनुष्य की आत्मानुभूति एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का सशक्त साधन माना गया है। इसके अन्तर्गत 'ब्रह्म जिज्ञासा' एवं शिक्षा में 'सा विद्या या विमुक्तये' की प्रधानता पायी गयी है तथा इसमें निहित शिक्षा दर्शन को आत्मज्ञान का समग्र स्वरुप समझा गया है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा जिसके अन्तर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर अन्य लौकिक एवं पार-लौकिक ग्रन्थों के अथाह ज्ञान भण्डार हैं उसमें शिक्षा को विद्या, ज्ञान, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा एवं भारती इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा का दर्शन एक विशिष्ट विधा के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पार-लौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग व त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है। इसी श्रृंखला में सिक्ख पन्थ का सर्वोच्च पवित्र ग्रन्थ 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' का स्थान आता है, जो प्रत्यक्ष रूप में सिक्ख गुरुजनों द्वारा प्रतिपादित किए गए शैक्षिक विचारों के संग्रह का मूर्त स्वरूप है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के शैक्षिक विचार प्राचीन भारतीय मनीषियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों के समान ही हैं। सिक्ख गुरुजनों द्वारा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत इन शिक्षा विचारों को प्रतिपादित करने का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को स्वयं से परिचित कराते हुए उसमें अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करना तथा उसे आध्यात्मिक रूप से जागृत करना था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षानुसार शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में से एक विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास भी है क्योंकि समस्त प्राणियों में भिन्न-भिन्न पदार्थों को प्रदान करने वाला प्रभु एक ही है। समस्त जीव उसी के अंश एवं उसी के अधीन हैं। अतएव मनुष्यों में तो अन्तर करने का कोई औचित्य नहीं बनता। यही भारतीय मानवतावादी दृष्टिकोण का चिंतन भी है, जिसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में स्थान दिया गया है। सिक्ख गुरुजनों ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत अपनी वाणियों द्वारा जाति भेद, वर्ण भेद एवं वर्ग भेद का दृढ़ता से विरोध किया है तथा 'अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धान्त में विश्वास किया है। सिक्ख गुरुजनों के उपदेश एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित उनकी वाणियाँ अपनी शिक्षाओं के माध्यम से जनमानस को विश्व बंधुत्व, भ्रातृत्व प्रेम व राष्ट्रीय समरसता का सन्देश प्रदान करती हैं। इस प्रकार शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सिक्ख गुरुजनों ने न केवल अपने विचार व्यक्त किए, अपितु इस दिशा में अनेक व्यावहारिक एवं प्रभावशाली कार्य भी किए हैं। इस कारण सिक्ख गुरुजनों द्वारा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत प्रतिपादित किए गए शिक्षा विचार जो तत्कालीन परिस्थितियों में अत्यन्त प्रासंगिक थे वह वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में भी अनुप्रयोग में लाए जा सकते हैं।

संकेताक्षर- गुरु, शिष्य, विद्या, शिक्षा, दर्शन, ज्ञान परम्परा, भारतवर्ष, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ।

1. प्रस्तावना :

शिक्षा सदैव ही जीवन दर्शन की अनुगामिनी रही है। शिक्षा जीवन लक्ष्यों एवं उसके विविध उद्देश्यों की प्राप्ति का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह मनुष्य के जीवन को उत्कर्ष की ओर ले जाकर उसमें सम्यक जीवन दृष्टि उत्पन्न करे। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत वैदिक शिक्षा व्यवस्था तत्कालीन जीवन दर्शन के पूर्णतया अनुकूल थी। परन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव जीवन को उचित दिशा प्रदान करने में सार्थक सिद्ध नहीं हो पा रही है। वर्तमान समय में भौतिकवाद एवं आधुनिकीकरण के अनुशीलन में मानवीय जीवन दृष्टि परिवर्तित हो चुकी है। अब मानव जीवन भ्रांत हो चुका है एवं आत्म कल्याण, लोक कल्याण व विश्वबंधुत्व हेतु कोई निश्चित लक्ष्य मानव जाति

के सम्मुख नहीं रह गया है। ऐसी स्थिति में शिक्षा का उद्देश्यहीन हो जाना भी स्वाभाविक ही है। विभिन्न दार्शनिकों व शिक्षाशास्त्रियों के मतानुसार भारतवर्ष की प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा के उद्देश्यों में भिन्नता का मुख्य कारण भारतीयों द्वारा अनुकरण किए गए पाश्चात्य जीवन दर्शन, जीवन मूल्य एवं जीवन लक्ष्य हैं। ऐसी विचारणीय स्थिति में शिक्षा में सुधार के विषय में गंभीरतापूर्वक मंत्रणा करने के साथ-साथ प्राचीन गौरवमयी भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनरावलोकन की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है।

इस सन्दर्भ में वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत संस्तुति प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि "वर्तमान परिदृश्य में आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि मूल्य ह्रास के कारणों एवं मूल्य परिवर्ती के उपायों को विवेचित कर वर्तमान परिवेश में समस्त नागरिकों को उनके मूल्यवान दायित्वों से अवबोध कराकर एक सौम्य-पुष्ट व समतामूलक समाज की परिकल्पना को मूर्तिमान किया जाए"। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार "विश्व के विभिन्न विकसित राष्ट्रों के अनुभवों से अब यह स्पष्ट हो चुका है कि अपनी भाषा, संस्कृति एवं परम्पराओं में सुशिक्षित होने से हानि नहीं अपितु शैक्षिक, सामाजिक एवं प्रौद्योगिक प्रगति के लिए लाभ ही प्राप्त हुआ है"। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारत के समस्त विद्यार्थियों को अच्छे, सुयोग्य, सफल, मौलिक विचारों वाले सृजनशील नागरिक बनाने के लिए जिन मुख्य विषयों, कौशलों व क्षमताओं को आवश्यक माना है उसमें 'भारत का ज्ञान' एक मुख्य विषय है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 'भारत के ज्ञान' को सन्दर्भित करते हुए विचार व्यक्त करती है कि "प्राचीन भारत से प्राप्त ज्ञान आधुनिक भारत की सफलताओं एवं भावी चुनौतियों हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के सम्बन्ध में भारत के भविष्य की आकांक्षाओं के लिए एक स्पष्ट मार्गदर्शन का कार्य करेगा"।

इस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में सुधार एवं पुनर्गठन का प्रस्ताव संस्तुत करती है, जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली का इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं एवं आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सके तथा इसे प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत की नींव पर भी समृद्ध बनाया जा सके। अतः अब समय आ गया है कि भारत के इस अमृत काल में भारत की वर्तमान पीढ़ी को महान गौरवमयी भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न आयामों, आदर्शों व शिक्षाओं से अवगत कराया जाए। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

2. शोध अध्ययन की वर्तमान सन्दर्भ में आवश्यकता एवं महत्व :

प्राचीन भारत का स्वर्णिम इतिहास आदर्शवादी प्रकृति का रहा है, जिस कारण उस समय वैदिक शिक्षा प्रणाली का स्वरूप भी आदर्शवादी था। वैदिक काल के उपरान्त धीरे-धीरे सुनियोजित रूप से विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण के पश्चात भारतीय शिक्षा प्रणाली में अनेक दोष आते गए, जिस कारण वर्तमान समय में आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन पाश्चात्य दर्शन पर आधारित पूर्ण भौतिकवादी एवं व्यवसायपरक दर्शन बन चुका है। इस भौतिक समृद्धि की अभिलाषा में अब मनुष्य अनैतिक कृत्यों को करने में भी संकोच का अनुभव नहीं कर रहा है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, हताशा, निराशा, भग्नाशा, घृणा, अपराध एवं व्यभिचार जैसे मनोविकार समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त हो रहे है। समस्त पारिवारिक एवं लोकाचार के सहसम्बन्ध व्यापार मात्र बनकर रह गए हैं। उच्च साक्षरता दर की प्राप्ति के उपरान्त भी मानवीय, व्यावहारिक एवं नैतिक आचरण में गिरावट आ रही है तथा सम्पूर्ण मानव जाति मूल्य क्षरण का सामना कर रही है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान समय की अधिकांश समस्याओं का समाधान मूल्यपरक शिक्षा के अन्तर्गत है। मूल्यपरक शिक्षा का लक्ष्य शिक्षा को ज्ञान के अभिकरण के रूप में समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना है तथा मनुष्य को आत्मिक व आध्यात्मिक रूप से जागरूक करते हुए समाज व राष्ट्र को नैतिक रूप से सशक्त बनाना है। मूल्यपरक शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत संस्तुति प्रस्तुत की गयी है। इसके अनुसार "वर्तमान समाज में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य कम होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करने हेतु हमारी प्राचीन ज्ञान निधि के वैदिक ग्रन्थों पर आधारित दर्शन में आस्था प्रकट करना अत्यन्त आवश्यक है। आज ऐसे प्रयत्नों की आवश्यकता है जिसके द्वारा शिक्षा के वर्तमान वैज्ञानिक स्वरूप का हमारे प्राचीन ग्रन्थों में निहित दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों के साथ समन्वय स्थापित हो सके"। वर्तमान समय में इस बात की अनिवार्य रूप से आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि आधुनिक भारत में मूल्य शिक्षा में होने वाले ह्रास के कारणों को पहचानते हुए उसके प्रतिकूल परिणामों को प्रस्तुत किया जाए एवं इसके आधार पर समस्त सम्भावित विसंगतियों को दूर करने का समुचित उपाय किया जाए। अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सही दिशा निर्धारण हेतु हमें अपने महान प्राचीन ग्रन्थों का पुनरावलोकन करने की आवश्यकता है एवं इनमें निहित शिक्षा दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

उक्त समस्त शैक्षिक आवश्यकताओं का अनुभव करते हुए शोध अध्येता द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। भारतीय शिक्षा को भारतीय संस्कारों से युक्त करने में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित महान सिद्ध गुरुजनों की शिक्षाओं का अत्यन्त महत्व रहा है। महान सिक्ख गुरुजनों की राष्ट्र भक्ति, भ्रातृत्व प्रेम भावना, समाज सुधार, सामाजिक समरसता, न्याय प्रियता एवं सामाजिक व आत्मिक शिक्षाएँ इतनी महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं कि इन्हें भारतीय शिक्षा में समाहित कर क्रान्तिकारी परिवर्तन लाए

जा सकते हैं। अतः यह अध्ययन निश्चित रूप से शिक्षा नियोजकों, शिक्षकों, शिक्षार्थियों, शोध अध्येताओं एवं समाज सुधारकों को दिशा-निर्देश दे सकने के साथ-साथ भारतीय शिक्षा के भारतीय स्वरुप को भी सुस्पष्ट कर सकेगा।

3. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :

- **सिंह प्रो0 गीता (2022) ने यू0जी0सी0 मानव संसाधन विकास केन्द्र दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के अन्तर्गत "भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में प्रासंगिकता" का अध्ययन किया।**

  इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल सम्प्रत्यय को समझना था तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना था। उक्त शोध अध्ययन के विश्लेषण उपरान्त यह निष्कर्षित किया गया कि भारतोदय हेतु हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना एवं फैलाना परम आवश्यक है। भारत की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु सनातन ज्ञान एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना अति आवश्यक है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के निर्देशों को ग्रहण करने के उपरान्त पाठ्यचर्या निर्माण व शिक्षण अभिकल्प को धरातल में कार्यान्वित करने की आवश्यकता होगी। जब हम सत्यनिष्ठा एवं वैज्ञानिकता के साथ भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सनातन ज्ञान को सुचारू रूप से आगे बढ़ा पाएंगे तभी आगामी पीढ़ी भारतीय गौरव को अनुभव कर सकेगी।

- **जैन डॉ0 मुकेश (2022), सह आचार्य, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेर (राजस्थान) ने भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध का अध्ययन किया।**

  इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा का विवेचनात्मक अध्ययन करना, भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों में आस्था प्रकट करना एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत हुए चिकित्सकीय एवं वैज्ञानिक शोध को समझना था। उक्त शोध अध्ययन के विवेचन के उपरान्त यह निष्कर्षित किया गया कि यदि हमें भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों में आस्था को पुनर्जीवित करना है तो इसके लिए सर्वप्रथम भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे प्राचीन मूल्यों यथा : पंच महायज्ञ, सोलह संस्कार, तीन ऋण, प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक पद्धति, वेद, उपनिषद एवं पुराणों में निहित शोध सामग्रियों को वर्तमान परिस्थितियों से अनुकूलित कर शिक्षण पाठ्यचर्या में स्थापित करना होगा। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध वर्तमान शोध नवाचार के समस्त सामाजिक पक्षों से सम्बन्धित है।

- **प्रश्रीचा मेहक (2022), शिक्षाशास्त्र विभाग, अमेठी विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश) ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाओं एवं उसके शैक्षिक निहितार्थों का अध्ययन" किया।**

  इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य सिक्ख दर्शन का अध्ययन करना, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाओं का अध्ययन करना एवं इसके विद्यालयी पाठ्यचर्या के वर्तमान शैक्षिक निहितार्थों को समझना था। उक्त शोध कार्य के विश्लेषण में यह पाया गया कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाएँ सार्वभौम हैं तथा वर्तमान भारतीय परिवेश में प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत शोध विश्लेषण के अनुसार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाएँ किसी एक धर्म विशेष में व्यक्त किए गए विचारों से सम्बद्ध नहीं हैं, अतएव इनकी शिक्षाओं को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्थान दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विद्यालयी पाठ्यचर्या के अन्तर्गत श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाओं का अनुप्रयोग सरलता के साथ किया जा सकता है। चूँकि इनके विचार सर्वक्षेत्रीय एवं बहुआयामी हैं तथा समस्त जन-मन को आकृष्ट करने वाले हैं। अतएव वर्तमान समय में विद्यार्थियों के आत्म विकास हेतु इन शिक्षाओं को आत्मसात करना अत्यन्त आवश्यक है।

4. शोध अध्ययन का शीर्षक :

प्रस्तुत लघु शोध के अन्तर्गत शोध अध्येता द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन को अध्ययन का विषय निर्धारित किया है। इसका शीर्षक निम्नवत इस प्रकार से है-

"भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन"।

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत इस प्रकार से हैं :

1) भारतीय ज्ञान परम्परा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सविस्तार अध्ययन करना।
3) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत करना।
4) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शाश्वत मूल्यों को प्रस्तुत करना।

5) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन को प्रस्तुत करना।
6) भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के स्थान एवं महत्त्व का अध्ययन करना।
7) भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
8) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन की वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

6. शोध अभिकल्प :

(क) प्रदत्त संकलन स्त्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत शोध अध्येता द्वारा सूचनाओं के संकलन एवं विवेचन हेतु मुख्य रूप से 2 प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसका विवरण क्रमशः इस प्रकार से है-

- **प्राथमिक स्त्रोत-** प्राथमिक स्त्रोत का सम्बन्ध प्रदत्तों के मौलिक स्वरूप से होता है। इसके अन्तर्गत ऐतिहासिक घटनाक्रम, सूचनाएं एवं तथ्य प्रारम्भिक व प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सिक्ख दर्शन की विभिन्न पांडुलिपियों, पोथी साहिबों, हस्त लिखित जीवन साखियों, सिक्ख इतिहास में निहित ताम्रपत्रों, शिलालेखों, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित विभिन्न गुरुजनों के शिक्षा उपदेशों, भगतों व ब्राह्मण भाटों की मूल रचनाओं के साथ-साथ नितनेम की टीका वाणियों (पद एवं दोहे), आचार्य वाणी व सन्देश नामावली (हुक्मनामा) को प्राथमिक स्त्रोत के रूप में लिया गया है।
- **द्वितीयक स्त्रोत-** द्वितीयक स्त्रोत का सम्बन्ध प्रदत्तों के गौण स्वरूप से होता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों को सम्मिलित किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा, सिक्ख दर्शन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 से सम्बन्धित विभिन्न प्रलेखों, पुस्तक-पुस्तिकाओं, प्रकाशित शोध सामग्रियों एवं इंटरनेट पर उपस्थित सम्बन्धित सामग्रियों को द्वितीयक स्त्रोत के रूप में लिया गया है।

(ख) शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जो कि पूर्णतः दार्शनिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। दार्शनिक शोध अध्ययन के अन्तर्गत मनुष्य के अनुभवों पर उनकी सत्यता का प्रतिस्थापन किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें अनुभवों का अध्ययन बौद्धिक स्तर पर किया जाता है एवं सत्य के नियमों तथा अस्तित्व के नियमों का भी प्रतिपादन किया जाता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित गुरु-शिष्य परम्परा, आचार्य परम्परा, शिक्षक-शिक्षार्थी संकल्पना, पाठ्यचर्या का स्वरूप, गुरु उपदेश एवं आचार्य वाणी को प्रकाश में लाना तथा वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य इनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना ही प्रस्तुत शोध अध्ययन का अभीष्ट उद्देश्य है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत शोध अध्येता द्वारा **'दार्शनिक वर्णनात्मक अनुसन्धान विधि एवं विषयवस्तु विश्लेषण विधि'** को शोध अध्ययन का मुख्य आधार बनाया गया है।

7. शोध अध्ययन का परिसीमांकन :

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन के अन्तर्गत 'भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन' किया गया है। चूँकि भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन क्षेत्र न केवल बहुआयामी है अपितु व्यापक सन्दर्भ को भी प्रस्तुत करने वाला है। अतएव प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन के विभिन्न पक्षों यथा : गुरु-शिष्य परम्परा, आचार्य परम्परा, गुरु-शिष्य संकल्पना, गुरु उपदेश, आचार्य वाणी, तत्व मीमांसा, मूल्य मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, शिक्षा का स्वरूप व प्रकृति, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या का स्वरुप, शिक्षण विधियाँ, शिक्षा अनुशासन व विद्यालय का स्वरुप, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, शिक्षण मूल्य एवं शिक्षा दर्शन को वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता के अध्ययन तथा वर्तमान शैक्षिक निहितार्थ हेतु उपादेयता के अध्ययन तक परिसीमांकित किया गया है।

8. भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक विवेचन :

(अ) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शिक्षा दर्शन

गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत 'शिक्षा' के लिए 'विद्या' अथवा 'ज्ञान' शब्द का प्रयोग किया गया है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में शिक्षा का मुख्य आधार गुरुमत जीवनयापन को माना गया है। गुरुमत जीवन के अन्तर्गत शिक्षा के अर्थ से अभिप्राय मनुष्य के शुद्धिकरण व आत्म विकास से है, जिससे मनुष्य अपने समाज व राष्ट्र में इस योग्य बन जाए कि वह स्वयं को बुराइयों से दूर रख सके एवं अच्छाइयों की ओर अग्रसर हो सके। श्री गुरु

ग्रन्थ साहिब में वर्णित उपदेश मनुष्य के मन को कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर अग्रसर करने, जीव (मनुष्य) को प्रभु आश्रित जीवन जीने, गुरु आज्ञा का पालन करने, अहंकार को त्यागने एवं समस्त प्राणियों से प्रेम करने के लिए सद् प्रेरणा प्रदान करते हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को उसकी आत्मशक्ति से परिचित कराती है। अतएव वही मनुष्य वास्तविक रूप से शिक्षित है जो स्वयं को पहचानता है, क्योंकि वास्तविक शिक्षा व्यक्ति को ईश्वर का साक्षात्कार कराती है तथा उसके अन्तर्मस्तिष्क को ज्ञान से प्रकाशित कर देती है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की सर्वाधिक प्रमुख शिक्षाओं के अन्तर्गत 'ईश्वर का नाम जपना', 'ईश्वर के गुण गाना', 'प्रभु आश्रित जीवन जीते हुए अपने समस्त कर्तव्यों का निर्वहन करना' एवं 'निष्काम भाव से सेवा करना' बताया गया है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के शिक्षा दर्शन के अनुसार जो मनुष्य गुरुवाणी की शिक्षाओं के अनुरूप जीवनयापन करते हुए निष्काम भाव से सेवा करता है उसे प्रभु की प्राप्ति होती है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में नैतिकता एवं अनैतिकता पर विशेष रूप से बल प्रदान किया गया है। इसके अन्तर्गत सिक्ख गुरुजनों ने विद्वान एवं ज्ञानी व्यक्ति में भेद करते हुए कहा है कि वह विद्वान मूर्ख के ही समान है जो काम, क्रोध, मोह, लोभ व अहंकार के वशीभूत है। गुरुवाणी में ज्ञानी एवं विद्वान का भेद स्पष्ट करने के लिए रावण का उदाहरण दिया गया है। गुरुवाणी के अनुसार वह महान पण्डित वेदों एवं शास्त्रों का ज्ञाता था परन्तु वह फिर भी स्वयं के ऊपर नियंत्रण नहीं रख सका। अतएव सच्चा ज्ञानी वही व्यक्ति है जो स्वयं के विचार व विवेक का समुचित उपयोग करना जनता है तथा इसके आधार पर उचित व अनुचित का विभेद में सक्षम होता है।

इसके अतिरिक्त श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत श्री जपुजी वाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्य के मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास की पाँच शैक्षिक अवस्थाएँ बतायी हैं, जो मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कलात्मक दृष्टिकोण, सृजनात्मक अभिवृत्ति, नैतिकता एवं आध्यात्मिक क्षमता के दैवीय सत्य का ज्ञान कराती हैं। शैक्षिक सन्दर्भ में ये पाँचों अवस्थाएँ दर्शाती हैं कि शिक्षा ज्ञान, बुद्धि, सत्य तथा ईश्वर के दृष्टिकोण व अस्तित्व का वास्तविक प्रकटीकरण है, जो वास्तविक अर्थों में मनुष्य को आत्मानुभूति के सर्वोच्च स्त्रोत की ओर अग्रसर करती है।

ग्रन्थानुसार, 'शिक्षा द्वारा शरीर, मन एवं अन्तरात्मा का सर्वांगीण विकास संभव है'। इस आदर्शवादी संकल्पना से सम्बन्धित अन्य विचार भी श्री गुरु नानक देव जी व अन्य सिक्ख गुरुजनों के विभिन्न पदों एवं साखियों से प्राप्त होते हैं, जिनमें यह बताया गया है कि शिक्षा मनुष्य को उसकी आत्म शक्ति से परिचित कराती है। इस प्रकार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की समस्त शिक्षाओं का स्वरूप दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रकृति का है।

(ब) भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का स्थान एवं महत्त्व

।। सिक्ख रहत मर्यादा (सिक्ख आचार संहिता) के अनुरूप सुशोभित श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी।।

(छायाचित्र सन्दर्भ निरूपण-1, सिक्ख संग्रहालय, गुरुद्वारा श्री हेमकुण्ड साहिब, ऋषिकेश उत्तराखण्ड, https://shrihemkuntsahib.com/journey_rihikesh.html)

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में सम्पादित जन जीवन को गौरवान्वित एवं आत्म शक्ति प्रदान करने वाला एक वृहद काव्य ग्रन्थ है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रादुर्भाव भारतवर्ष में एक ऐसे समय में हुआ जब यहाँ के दो प्रमुख धर्मावलंबियों हिन्दू एवं मुसलमानों के मध्य संघर्ष तेजी से बढ़ रहा था। ऐसे में सिक्ख पन्थ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी एवं उनके द्वारा प्रतिपादित की गयी विभिन्न गुरु वाणियों को दो परस्पर विरोधी मान्यताओं को मानने वाले मतावलंबियों के मध्य शांति दूत के रूप में देखा जाता है।

अनेक सिक्ख इतिहासकार एवं विद्वान सिक्ख परम्परा को भक्ति आंदोलन की एक शाखा के रूप में वर्णित करते हैं, जबकि कुछ दार्शनिक विद्वान इसे भारतीय सन्त परम्परा की एक शाखा के रूप में स्वीकार करते हैं। सिक्ख दर्शन का अध्ययन करने पर यह परिलक्षित होता है कि श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित किया गया सिक्ख पन्थ मध्य काल के भक्ति आन्दोलन से अत्यधिक प्रभावित था, जिसमें इनकी अपनी कुछ भिन्न विशिष्टताएँ भी अंतर्निहित थीं। यही कारण है कि सिक्ख पन्थ अपनी उत्पत्ति के उपरान्त सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन के रूप में विकसित हो गया। सिक्ख मत के अनुसार चलने वाले अनुयायियों के लिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के अनुपालन पर अत्यधिक बल दिया गया है। इन मूल्यों का सम्बन्ध मुख्य रूप से समानता, सत्यनिष्ठा, भ्रातृत्व एवं छोटे-बड़े के भेद को मिटाने के साथ-साथ निर्भीकता, शौर्यता, वीरता एवं पराक्रमता की भावना से है। लगभग 250 वर्षों से अधिक समय से श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी वर्तमान समय में मानव जाति के अन्तर्मन पर दस सिद्ध गुरुओं की ज्योत के स्वरूप में विद्यमान हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत सत्य का जीवन जीने, सदैव ईश्वर पर विश्वास करने, सभी का सम्मान करने एवं जरूरतमंद प्राणियों की सहायता करने के उपदेश दिए गए हैं। यही कारण है कि आज भी लोग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में अपने दसों सिद्ध गुरुजनों का स्वरूप देखकर उनके समक्ष नतमस्तक होते हैं।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत सदियों पहले महान सिक्ख गुरुजनों द्वारा जो विचार व्यक्त किए गए थे, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि पूर्व समय में थे। इनमें निहित शिक्षाएँ मानव व्यवहार के परिवर्तन पर आधारित हैं, जो व्यक्ति को अनैतिकता से नैतिकता की ओर कर्तव्यबोध कराते हुए उसे मानव जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर करती हैं। इस प्रकार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाएँ मनुष्य के जीवन को न केवल प्रकाशित करने का कार्य करती हैं अपितु उसे आदर्श व्यक्ति बनने के लिए भी अभिप्रेरित व निर्देशित करती हैं। अतएव वर्तमान सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का स्थान अद्वितीय एवं अनुकरणीय है तथा इनमें निहित शिक्षाओं के अनुकरण द्वारा जनमानस में समाज एवं राष्ट्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के साथ-साथ सम्पूर्ण मानवता में गुणात्मक सुधार लाने का कार्य किया जा सकता है।

(स) भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

भारतीय संस्कृति के उत्तरोत्तर विकास एवं संरक्षण में 'भारतीय ज्ञान परम्परा' का अति विशिष्ट स्थान है, जो सम्पूर्ण मानवता को आलोकित करने वाली ज्ञान निधि है। भारतीय ज्ञान परम्परा उच्च जीवन आदर्शों, विचारशीलता, गतिशीलता एवं उदात्त गुणों की प्रसारक परम्परा है, जिसका इतिहास लगभग पाँच हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। भारत की गौरवमयी ज्ञान परम्परा की गौरवगरिमा प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त रही है। भारतवर्ष की भूमि से प्रतिपादित ज्ञान सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने को चिरकाल से प्रकाशित करता आ रहा है। विश्व की अनेक देशों की सभ्यताएँ व परम्पराएँ जब अपनी शैशवावस्था में थीं तब भारतवर्ष में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी, ओदन्तपुरी, जगद्दला, कांचीपुरम, पुष्पगिरी, शारदा विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ जैसे अनेक विश्वविद्यालय अपनी महान ज्ञान परम्परा से सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर रहे थे। उस समय अपनी इसी ज्ञान परम्परा के कारण भारतवर्ष 'विश्वगुरु' कहलाता था।

ज्ञान, प्रज्ञा एवं सत्य की खोज को भारतीय चिंतन परम्परा एवं दर्शन में सदा सर्वोच्च प्रयोजन माना गया है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा एवं भारतीय मूल्यों की ही देन है कि आज भी अनेक भारतीय चिंतक विश्वबंधुत्व व रामराज्य के रूप में एक ऐसे राज्य का सपना देखते हैं, जहाँ किसी भी प्रकार का कोई संताप न हो। अतएव यदि वर्तमान समय में भारतवर्ष को मानवता एवं शांति के साथ विकास पथ पर अग्रसर करना है तो समस्त भारतवासियों को भारतीय ज्ञान परम्परा को आत्मसात करना होगा, क्योंकि जीवन के विविध पक्षों को जानने के साथ-साथ जीवन को सफल बनाने का मार्ग भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रदर्शित किया गया है।

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत स्वदेशी ज्ञान प्रणाली एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनरावलोकन की संस्तुति व्यक्त की गयी है। यह विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास हेतु आवश्यक सुधार प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही विद्यार्थी की देखभाल करना, शिक्षा संरचना में और अधिक सुधार करना, शिक्षण प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नवीन पाठ्यचर्या में लाना है। इसके लिए यह शिक्षा के 5+3+3+4 प्रारूप को अपनाते हुए विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। इसके अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित ज्ञान-विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर बल दिया गया है।

इस प्रकार वर्तमान आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भी प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनरावलोकन एवं क्रियान्वयन की प्रासंगिकता कहीं अधिक है।

(द) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन की वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत सिक्ख गुरुजनों ने जो शैक्षिक विचार व्यक्त किए हैं वह तत्कालीन परिस्थितियों में तो उपयुक्त थे ही वरन यह शैक्षिक विचार वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में भी पूर्ण रूप से व्यावहारिक एवं प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। भारतीय परिवेश वर्तमान समय में परिवर्तन के जिस दौर से गुजर रहा है वहाँ मूल्यों का संकट छाया हुआ है। शैक्षिक संस्थान जो सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक उन्नति में सहायक होते हैं वह भी वर्तमान समय में अन्याय एवं घृणा से ग्रस्त हो चुके हैं। ऐसे में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित सिक्ख गुरुजनों के विचार जनमानस को शांति, प्रेम, सौहार्द, मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान करने वाले हैं। उन्होंने शिक्षा के जिस सम्प्रत्यय को लेकर शिक्षा के अभीष्ट उद्देश्य, शिक्षण मूल्य, शिक्षण विधियाँ एवं गुरु शिष्य संकल्पना को प्रस्तुत किया था, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में अत्यन्त सुसंगत, व्यावहारिक एवं प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इन शैक्षिक मूल्यों के अनुपालन द्वारा निश्चित रूप से भारतीय समाज को एक नवीन दिशा प्रदान की जा सकती है तथा भारतवर्ष को भी 'विकसित भारत-2047' की संकल्पना की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर विशेष रूप से बल दिया गया है। इस शिक्षा नीति के अनुसार, भौतिकवादी मूल्य एवं सफलता के मानक नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक अनुशासन एवं उच्च आदर्श द्वारा ही स्थापित किए जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में सिक्ख गुरुजनों द्वारा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत चारित्रिक निर्माण हेतु व्यक्त किए गए विविध विचार अत्यन्त विचारणीय प्रतीत होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत मानवतावाद की संकल्पना एवं विश्व बंधुत्व की भावना की संस्तुति प्रस्तुत की गयी है, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय मैत्रीभाव एवं भ्रातृत्व भाव मुख्य तत्व है। मानवतावाद की दृष्टि से यदि विवेचना की जाए तो यह ज्ञात होता है कि समस्त सिक्ख गुरुजन पूर्ण रूप से मानवतावादी व्यक्तित्व थे, जिनका मुख्य कार्य मानव मात्र की सेवा व कल्याण करना था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित विचारों के अनुसार 'सच्चा शिक्षित व्यक्ति वह है जो दूसरों की भलाई के विषय में सोचे, क्योंकि मानव की सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची सेवा करना है'। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित सिक्ख गुरुजनों के शैक्षिक दर्शन का मुख्य तत्व भी यही है।

इस प्रकार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के शिक्षा दर्शन में निहित मानवतावाद का सम्प्रत्यय मानवीय गुणों के विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में सर्वाधिक न्यायसंगत प्रतीत होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार "सौन्दर्यात्मक कलाएँ यथा- संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य इत्यादि व्यक्तित्व के संतुलित भावात्मक विकास हेतु आवश्यक होते हैं तथा उसकी सृजनात्मक कल्पनाशक्ति का विकास करते हैं। इस प्रकार की शिक्षाएँ व्यक्ति के व्यवहार में सुधार लाती हैं तथा व्यवहार का यह परिशोधन उसे सभ्य व सुशील बनाता है"।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में व्यक्त विचारों के अनुसार ललित कलाओं में उच्च मानवीय शक्ति अन्तर्निहित होती है जो मनुष्य को उत्कृष्ट आनन्द प्रदान करती है एवं उसे सुसभ्य, सुशिक्षित व सुसंस्कृत बनाती है। सिक्ख गुरुजनों ने सौन्दर्य एवं संगीत को लौकिक आनन्द, आध्यात्मिक सुख एवं परम हर्ष का साधन माना है। गुरुद्वारों के अन्तर्गत भी प्रातःकाल एवं सायंकाल के समय गायन की जाने वाली गुरुवाणी इसी सौन्दर्यानुभूति की शिक्षाओं का प्रमाण हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एकीकरण एवं स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत सिक्ख गुरुजनों की शिक्षाएँ निश्चित रूप से राष्ट्रीय एकता, भ्रातृत्व, समरसता एवं समतामूलक समाज पर आधारित हैं जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की विभिन्न शिक्षाओं को प्रासंगिक एवं सुसंगत बनाती हैं।

9. शोध निष्कर्ष एवं विमर्श :

वर्तमान समय में भौतिकवाद एवं आधुनिकीकरण के अनुशीलन में मानवीय जीवन दृष्टि परिवर्तित हो चुकी है। अब मनुष्य जीवन भ्रांत हो चुका है एवं आत्म कल्याण, लोक कल्याण तथा विश्वबंधुत्व हेतु कोई निश्चित लक्ष्य मानव जाति के सम्मुख नहीं रह गया है। ऐसी स्थिति में शिक्षा का उद्देश्यहीन हो जाना भी स्वाभाविक ही है। विभिन्न दार्शनिकों व शिक्षाशास्त्रियों के मतानुसार भारतवर्ष की प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा के उद्देश्यों में भिन्नता का मुख्य कारण भारतीयों द्वारा अनुकरण किए गए पाश्चात्य जीवन दर्शन, जीवन मूल्य तथा जीवन लक्ष्य हैं। ऐसी विचारणीय स्थिति में शिक्षा में सुधार के विषय में गंभीरतापूर्वक मंत्रणा करने के साथ-साथ प्राचीन गौरवमयी भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनरावलोकन की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है।

इस सन्दर्भ में वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत संस्तुति प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि "वर्तमान परिदृश्य में आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि मूल्य ह्रास के कारणों एवं मूल्य परिवर्ती के उपायों को विवेचित कर वर्तमान परिवेश में समस्त नागरिकों को उनके मूल्यवान दायित्वों से अवबोध कराकर एक सौम्य-पुष्ट व समतामूलक समाज की परिकल्पना को मूर्तिमान किया जाए"। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार "विश्व के विभिन्न विकसित राष्ट्रों के अनुभवों से अब यह स्पष्ट हो चुका है कि अपनी भाषा, संस्कृति एवं परम्पराओं में सुशिक्षित होने से हानि नहीं अपितु शैक्षिक, सामाजिक एवं प्रौद्योगिक प्रगति के लिए लाभ ही प्राप्त हुआ है"। अतएव राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारत के समस्त विद्यार्थियों को अच्छे, सुयोग्य, सफल, मौलिक विचारों वाले सृजनशील नागरिक बनाने के लिए जिन मुख्य विषयों, कौशलों व क्षमताओं को आवश्यक माना है उसमें 'भारत का ज्ञान' एक मुख्य विषय है।

इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में इस बात की अनिवार्य रूप से आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि आधुनिक भारत में मूल्य शिक्षा में होने वाले ह्रास के कारणों को पहचानते हुए उसके प्रतिकूल परिणामों को प्रस्तुत किया जाए एवं इसके आधार पर समस्त संभावित विसंगतियों को दूर करने का समुचित उपाय किया जाए। अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सही दिशा निर्धारण हेतु हमें अपने महान प्राचीन ग्रन्थों का पुनरावलोकन करने की आवश्यकता है एवं इनमें निहित शिक्षा दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

उक्त समस्त शैक्षिक आवश्यकताओं का अनुभव करते हुए शोध अध्येता द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। भारतीय शिक्षा को भारतीय संस्कारों से युक्त करने में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित महान सिद्ध गुरुजनों की शिक्षाओं का अत्यन्त महत्व रहा है। महान सिक्ख गुरुजनों की राष्ट्र भक्ति, भ्रातृत्व प्रेम भावना, समाज सुधार, सामाजिक समरसता, न्याय प्रियता एवं सामाजिक व आत्मिक शिक्षाएँ इतनी महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं कि इन्हें भारतीय शिक्षा में समाहित कर क्रान्तिकारी परिवर्तन लाए जा सकते हैं। अतः यह अध्ययन निश्चित रूप से शिक्षा नियोजकों, शिक्षकों, शिक्षार्थियों, शोध अध्येताओं एवं समाज सुधारकों को दिशा-निर्देश दे सकने के साथ-साथ भारतीय शिक्षा के भारतीय स्वरुप को भी सुस्पष्ट कर सकेगा। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

सन्दर्भ सूची :

1. सिरोला सागर एवं सिरोला डॉ. देवकी (2024), शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं नेपाल ज्ञान परम्परा में अन्तर्सम्बन्ध" आई0एस0बी0एन0 अध्याय पुस्तक, भारतीय ज्ञान परम्परा का उद्भव एवं विकास, कालिन्दी प्रकाशन आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश), ISBN : 978-9937-9715-15.
2. सिरोला सागर एवं सिरोला डॉ. देवकी (2024), शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) ''भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020'' International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), E-ISSN : 2582-2160, Volume 6, Issue 2, March-April 2024.
3. परिहार डॉ. सावित्री एवं चौहान श्रीमती प्रभा (2024) ने "प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं इतिहास" International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN : 2320-8708, Volume 12, Issue 1, January-February 2024.
4. तिवारी डॉ. शालू (2023), पोस्ट डॉक्टोरल फ़ैलो (आई0सी0एस0एस0आर0), महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पूर्वी चम्पारण मोतिहारी (बिहार), "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सतत विकास लक्ष्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में" आई0एस0बी0एन0 अध्याय पुस्तक, भारतीय शिक्षा का इतिहास, शिवालिक प्रकाशक (दिल्ली), ISBN : 93-91214-52-5.
5. सिंह प्रो. रविन्दर (2023), भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) ने "भारतीय ज्ञान परम्परा का भू-सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत सन्दर्भ का अध्ययन" researchgate.net/publication/375423584.
6. सिरोला सागर एवं पुरोहित डॉ0 प्रेम प्रकाश (2023), शिक्षाशास्त्र विभाग, हे0नं0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड), "श्री गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचारों की वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन" बोहल शोध मंजूषा, अन्तर्राष्ट्रीय बहुविषयक सहकर्मी समीक्षा शोध पत्रिका, ISSN : 2395-7115, Volume 17, Issue 5 (1), मई 2023.
7. सिंह प्रो. गीता (2022), यू0जी0सी0 मानव संसाधन विकास केन्द्र दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली "भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में प्रासंगिकता" Aarihat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ), ISSN : 2278-5655, Volume 11, Issue 1, January-February 2022.
8. जैन डॉ. मुकेश (2022), सह आचार्य, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेड़ (राजस्थान) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध" अनुकर्ष सहकर्मी समीक्षा त्रैमासिक शोध पत्रिका, ISSN : 2583-2948.
9. प्रश्रीचा मेहक (2022), "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाओं एवं उसके शैक्षिक निहितार्थों का अध्ययन", पी-एच0डी0 शोध ग्रन्थ, शिक्षाशास्त्र विभाग, अमेठी विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश)।
10. सिरोला सागर एवं सिरोला डॉ0 देवकी (2022), शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड) एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) "प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली" आई0एस0बी0एन0 अध्याय पुस्तक, भारतीय शिक्षा का इतिहास, शिवालिक प्रकाशक (दिल्ली), ISBN : 93-91214-52-5.
11. सुनीता, सिंह डॉ. अमरजीत एवं त्यागी डॉ0 मुनेन्द्र कुमार (2021), शिक्षाशास्त्र विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय चितौड़गढ़ (राजस्थान), "गुरु नानक देव जी के चिन्तन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का एक समीक्षात्मक अध्ययन" पी-एच0डी0 शोध ग्रन्थ।

12. सिंह प्रिंस कुमार एवं राय निशा (2021), गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध (दर्शन एवं वैचारिकी के विशेष सन्दर्भ में)", जनकृति बहु-विषयक अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित शोध पत्रिका, ISSN : 2454-2725.
13. तिवारी डॉ0 प्रवीण कुमार (2021), सह आचार्य, शिक्षा विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश), "भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु की संकल्पना" शोध धारा, समवर्ती समीक्षा त्रैमासिक शोध पत्रिका, ISSN : 0975-3664, Volume 3, September 2021.
14. तिवारी डॉ0 प्रवीण कुमार (2020), सह आचार्य, शिक्षा विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश), "भारतीय ज्ञान परम्परा में शिष्य की संकल्पना" ज्ञान गरिमा सिन्धु, समवर्ती समीक्षा त्रैमासिक शोध पत्रिका, ISSN : 2321-0443, संयुक्तांक : 66-67 , September 2020.
15. चौधरी पारुल एवं गौड़ प्रो0 शोभा (2019), शिक्षा संकाय, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश), "सिक्ख दर्शन एवं उसमें निहित शैक्षिक विचारों का एक समीक्षात्मक अध्ययन" पी-एच0डी0 शोध ग्रन्थ।
16. मालवीय राजीव (2018), "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" शारदा प्रकाशन पुस्तक भवन, प्रयागराज, पृ0सं0 614।
17. उठवाल डॉ. राहुल (2018), "भारत में शिक्षा का स्वरूप : प्राचीन, मध्यकालीन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में", शोध नवनीत, षडमासिकी अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, ISSN : 2321-6581, Volume 11, Issue 2, July-December 2018.
18. कौर डॉ. बलजीत (2016), "श्री गुरु नानक देव जी की वाणी में मूल सरोकार" Upstream Research International Journal (URIJ), ISSN : 2321-0567, Volume 4, Issue 2, April 2016.
19. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
20. विष्णु पुराण, २/३/१[1](श्लोक)
21. तैत्तिरीय उपनिषद[2] (सूक्ति)
22. अथर्ववेद, शौनक संहिता[3] (श्लोक)
23. सहित माला, गुरमत कवि भाई गुरदास जी, पौड़ी २७[4]
24. लोकोक्ति, जीवन साखी, श्री गुरु नानक देव जी[5]
25. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री जपुजी वाणी, अंग-१[6]
26. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला ५, राग वहंसु, अंग-५७७[7]
27. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला ५, राग सोरठि, अंग-५९५[8]
28. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, राग वसंत, अंग-११६८[9]
29. आसा दी वार, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, अंग-४८४[10]
30. राग सूही, अंग-८९१[11]
31. श्री जपुजी वाणी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, अंग-६[12]
32. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, राग आसा, अंग-३५६[13]
33. श्री जपुजी वाणी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, अंग-२[14]
34. महोपनिषद, अध्याय ६, श्लोक ८१[15]
35. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, रामकली महल्ला 1, अंग-९३२[16]
36. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री जपुजी वाणी, अंग-३[17]
37. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री जपुजी साहिब, अंग-१[18]
38. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री जपुजी साहिब, अंग-१[19]
39. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला ४, गौरी वैरागन, अंग-१६८[20]
40. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री जपुजी वाणी, अंग-२[21]
41. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला १, सिद्ध गोष्ठी, अंग-९४३[22]
42. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला १, सीरी राग, अंग-16[23]
43. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला ४, राग आसा, अंग-४४४[24]
44. आहूजा आर0एल0 इंडिजीनस एजुकेशन इन पंजाब, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर पंजाब[25]

45. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, कबीर, अंग-१३७६[26]
46. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, महला ५, राग गौरी, अंग-५२२[27]

इंटरनेट उद्धरण स्त्रोत

- https://doi.org/10.36948/ijfmr.2024.v06i02.15952
- https://E-Gyankosh.ac.in/सिक्ख_धर्म/ignou.ac.in
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/शिक्षा_दर्शन
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/भारत_का_इतिहास
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/भारत_की_संस्कृति
- https://indiafoundation.in/articles-and-commentaries/ancient-indian-knowledge-systems-and-their-relevance-today-with-an-emphasis-on-arthasastra/
- https://leverageedu.com/blog/hi/भारतीय-संस्कृति/
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in/
- https://shrihemkuntsahib.com/journey_rihikesh.html
- https://youtu.be/TcaAgcnTUQY?si=l01Z9VuTXaJFGBFm
- https://www.alliance.edu.in/anukarsh/archives/vol-2-issue-3/hi/mukesh-jain-lekh.pdf
- https://www.education.gov.in/en
- https://www.education.gov.in/nep/about-nep
- https://m.youtube.com/channel/UCgF7ULxdGr13RF4GRE1G6Dw
- https://www.researchgate.net/profile/Sagar-Singh-Sirola
- https://www.google.co.in/search?q=राष्ट्रीय+शिक्षा+नीति+2020[28]